प्रसाद : नाट्य और रंग-शिल्प

गोविन्द चातक

891.9
जयप्र

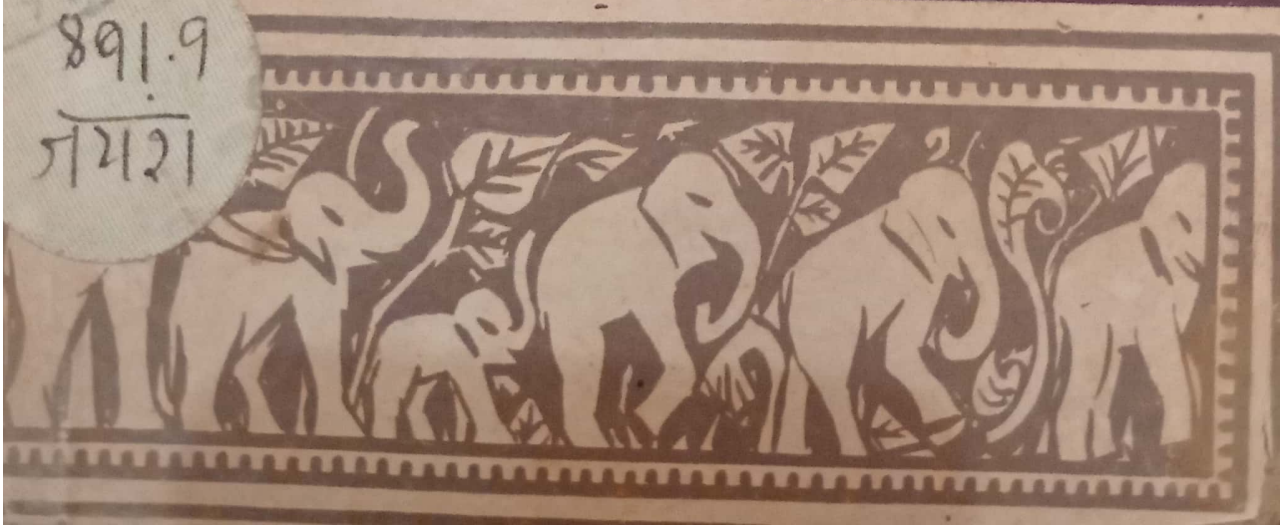

अनुक्रम

खंड १ : पीठिका, परम्परा और प्रयोग

१. प्रसाद-पूर्व हिंदी नाटक १
२. युग-चेतना, प्रेरणा और प्रभाव ११
३. नई नाट्य शैली की खोज ५१

खंड २ : नाट्य कृतियाँ और उनकी परिकल्पना

१. प्रारम्भिक कृतियाँ ६५
२. दिशा-संकेत ७५
३. 'कामायनी' की नाट्यानुभूति ९९
४. प्रौढ़ कृतित्व १११
५. नवीन प्रयोग १५२

खंड ३ : नाट्य शिल्प

१. वस्तु संघटन १७७
२. पात्र-सृष्टि १९९
३. भाषा-संरचना और संवाद २२०
४. रस-दृष्टि २४१

खंड ४ : रंग-प्रयोग

१. प्रसाद-पूर्व रंग-परम्परा २५३
२. प्रसाद की रंगमंच सम्बन्धी धारणा २६०
३. रंगमंचीय प्रभाव और पृष्ठभूमि २६९
४. रंग-प्रयोग और अभिनेयता २८१

CamScanner